कार्ल मार्क्स (1867)

पूँजी

पहली पुस्तक

पूंजीवादी उत्पादन

पूंजी — प्रथम खंड

भाग 1 पण्य और द्रव्य

अध्याय 2 | विनिमय

यह बात साफ है कि पण्य खुद मण्डी में जाकर अपने आप अपना विनिमय नहीं कर सकते। इसलिए इस मामले में हमें उनके संरक्षकों का सहारा लेना होगा, जो कि उनके मालिक भी होते हैं। पण्य वस्तु होते हैं, और इसलिए उनमें मनुष्य का प्रतिरोध करने की शक्ति नहीं होती। यदि उनमें नम्रता का अभाव हो, तो मनुष्य बल-प्रयोग कर सकता है; दूसरे शब्दों में वह ज़बर्दस्ती उनपर अधिकार कर सकता है। [36] इसलिए कि इन वस्तुओं के बीच पण्यों के रूप में संबंध स्थापित हो सके, यह ज़रूरी है कि उनके संरक्षक ऐसे व्यक्तियों के रूप में एक दूसरे के साथ संबंध स्थापित करें, जिनकी इच्छा इन वस्तुओं में निवास करती हो, और इस तरह व्यवहार करें कि उनमें से किसी को भी पारस्परिक रज़ामंदी से की हुई कार्रवाई के सिवा और किसी तरह दूसरे का पण्य हथियाने अथवा अपने पण्य से हाथ धोने का मौक़ा न मिले। अत: पण्यों के संरक्षकों को एक दूसरे के निजी स्वामित्व के अधिकार को मानना पड़ेगा। यह क़ानूनी संबंध, जो इस प्रकार अपने का एक समझौते के रूप में व्यक्त करता है – चाहे वह समझौता किसी विकसित क़ानूनी प्रणाली का अंग हो या न हो – दो इच्छाओं का संबंध होता है, और वह उन दोनों वास्तविक आर्थिक संबंधों का प्रतिबिंब मात्र ही होता है। यह आर्थिक संबंध ही प्रत्येक क़ानूनी कार्रवाई की विषय-वस्तु को निर्धारित करता है। [37] व्यक्तियों का एक दूसरे के लिए केवल पण्यों के प्रतिनिधियों के रूप में और इसलिए पण्यों के मालिकों के रूप में अस्तित्व होता है। अपनी खोज के दौरान हम आम तौर पर पायेंगे कि आर्थिक रंगमंच पर आनेवाले पात्र केवल उनके बीच पाये जानेवाले आर्थिक संबंधों के ही साकार रूप होते हैं।

किसी पण्य और उसके मालिक में प्रमुख अन्तर यह होता है कि पण्य दूसरे हर पण्य को ख़ुद अपने मूल्य के अभिव्यक्त होने का रूप मात्र समझता है। पण्य जन्म से ही हर प्रकार की ऊंच-नीच को बराबर करता चलता है और सर्वथा आस्थाहीन होता है। वह न केवल अपनी आत्मा का, बल्कि अपने शरीर तक का किसी भी दूसरे पण्य के साथ विनिमय करने को सदा तैयार रहता है, भले ही वह पण्य ख़ुद मारितोर्नेस से भी ज़्यादा घिनौना क्यों न हो। पण्य में यथार्थ को पहचानने की क्षमता के इस अभाव को उस पण्य का मालिक अपनी पांच या इससे भी अधिक ज्ञानेंन्द्रियों द्वारा पूरा कर देता है। ख़ुद उसके लिए अपने पण्य का कोई तात्कालिक उपयोग-मूल्य नहीं होता। अन्यथा वह उसे मण्डी में लेकर न आता। उसका दूसरों के लिए उपयोग-मूल्य होता है, लेकिन ख़ुद अपने मालिक के लिए उसका केवल यही प्रत्यक्ष उपयोग-मूल्य होता है कि वह विनिमय-मूल्य का आधार और इसलिए विनिमय का साधन होता है।[38] चुनांचे पण्य का मालिक तय कर लेता है कि वह अपने पण्य का ऐसे पण्यों से विनिमय करेगा, जिनका उपयोग-मूल्य उसके काम आ सकता है। सभी पण्यों के बारे में यह बात सच है कि वे अपने मालिकों के लिए उपयोग-मूल्य नहीं होते, और जो उनके मालिक नहीं हैं, उनके लिए वे उपयोग-मूल्य होते हैं। चुनांचे सभी पण्यों के लिए ज़रूरी है कि वे एक के हाथ से दूसरे के हाथ में जायें। लेकिन एक के हाथ से दूसरे के हाथ में जाना ही तो विनिमय है, और वह विनिमय मूल्यों के रूप में उनका एक दूसरे के साथ संबंध स्थापित कर देता है और पण्यों को मूल्यों के रूप में व्यवहार में आने का अवसर देता हे। इसलिए पण्यों के उपयोग-मूल्यों के रूप में व्यवहार में आने के पहले यह ज़रूरी है कि वे मूल्यों के रूप में व्यवहार में आयें।

दूसरी ओर, पण्यों के मूल्यों के रूप में व्यवहार में आने के पहले उनका यह ज़ाहिर करना ज़रूरी हे कि वे उपयोग-मूल्य हैं। कारण कि उनपर ख़र्च किये गये श्रम का महत्व केवल उसी हद तक होता है, जिस हद तक कि वे ऐसे ढंग से ख़र्च किया जाता है, जो दूसरों के लिए उपयोगी हो। वह श्रम दूसरों के लिए उपयोगी है या नहीं और चुनांचे उससे पैदा होनेवाली वस्तु दूसरों की आवश्यकताओं को पूरा करने की योग्यता रखती है या नहीं, यह केवल विनिमय-कार्य द्वारा ही सिद्ध हो सकता है।

पण्य का प्रत्येक मालिक केवल ऐसे पण्यों से उसका विनिमय करना चाहता है, जिनके उपयोग-मूल्य से उसकी कोई आवश्यकता पूरी होती हो। इस दृष्टि से विनिमय उसके लिये केवल एक निजी सौदा होता है। दूसरी ओर, वह चाहता है कि उसके पण्य के मूल्य को मूर्त रूप प्राप्त हो, यानी वह समान मूल्य के किसी अन्य उपयुक्त पण्य में बदल जाये, भले ही दूसरे पण्य के मालिक के लिये उसके अपने पण्य का कोई उपयोग-मूल्य हो या न हो। इस दृष्टि से विनिमय उसके लिये एक सामान्य ढंग का सामाजिक सौदा होता है। लेकिन यह नहीं हो सकता कि सौदों की कोई एक ही तरतीब पण्यों के सभी मालिकों के लिये एक ही समय में विशुद्ध निजी चीज़ भी हो विशुद्ध और सामाजिक एवं सामान्य चीज़ भी।

आइये , इस मामले की थोड़ी और गहराई में जायें। किसी भी पण्य के मालिक के लिये उसके अपने पण्य का एक विशिष्ट समतुल्य होता है इसलिये ख़ुद उसका पण्य बाकी सब पण्यों का सार्विक समतुल्य होता है। लेकिन चूंकि यह बात हर मालिक पर लागू होती है , इसलिये वास्तव में कोई पण्य सार्विक समतुल्य का काम नहीं करता और पण्यों के सापेक्ष मूल्य का कोई ऐसा सामान्य रूप नहीं होता , जिसमें उनको मूल्यों के रूप में बराबर किया जा सके और उनके मूल्यों के परिमाण का मुकाबला किया जा सके । इसलिए अभी

तक पण्य पण्यों के रूप में एक दूसरे का सामना नहीं करते , बल्कि केवल उत्पाद के रूप में या उपयोग-मूल्यों के रूप में एक दूसरे के सामने आते हैं।

इस कठिनाई के पैदा होने पर हमारे पण्यों के मालिक फ़ाउस्ट की तरह सोचते हैं कि " Im Anfang war die That" ["शुरूआत अमल से हुई थी"] । चुनांचे उन्होंने सोचने के पहले अमल किया और सौदा कर डाला। पण्यों का स्वभाव जिन नियमों को अनिवार्य बना देता है, उनका वे सहज प्रवृत्ति से पालन करते हैं। अपने पण्यों का मूल्यों के रूप में और इसलिये पण्यों के रूप में एक दूसरे के साथ संबंध स्थापित करने का उनके सामने सिर्फ़ यही एक तरीक़ा है कि अपने पण्यों का सार्विक समतुल्य के रूप में किसी और पण्य के साथ मुकाबला करें। यह बात हम पण्य के विश्लेषण से जान चुके हैं । लेकिन कोई ख़ास पण्य केवल एक सामाजिक कार्रवाई से ही सार्विक समतुल्य बन सकता है। इसलिये बाक़ी सब पण्यों की सामाजिक कार्रवाई उस ख़ास पण्य को अलग कर देती है, जिसके रूप में वे सब अपने मूल्यों को व्यक्त करते हैं । चुनांचे इस पण्य का भौतिक रूप सामाजिक तौर पर मान्य सार्विक समतुल्य का रुप बन जाता है । इस सामाजिक क्रिया के परिणामस्वरूप सार्विक समतुल्य होना उस पण्य का ख़ास काम बन जाता है, जिसे बाकी पण्य इस तरह अपने से अलग कर देते हैं। इस प्रकार वह पण्य द्रव्य बन जाता है। "इनका एक सा दिमाग़ होता है और वे सब अपनी शक्ति और अपना अधिकार हैवान को सौंप देंगे।" "और सिवाय उसके, जिसके ऊपर हैवान का निशान होगा या जिसके पास उसका नाम या उसके नाम का हिन्दसा होगा, और कोई न तो ख़रीद पायेगा और बेच पायेगा।"- अपोकलिप्स, अध्याय 17, 13।

द्रव्य एक ऐसा स्फटिक है, जिसका विनिमयों की क्रिया के दौरान अनिवार्य रूप से निर्माण हो जाता है और जिसके द्वारा श्रम से पैदा होने वाली अलग-अलग वस्तुओं का एक दूसरे के साथ समीकरण किया जाता है और इस तरह उनको व्यवहार में पण्यों में बदल दिया जाता है। पण्यों में उपयोग-मूल्य और मूल्य का जो विरोध छिपा रहता है, उसे विनिमयों की ऐतिहासिक प्रगति और उनका विस्तार विकसित करता है। व्यापारिक आदान-प्रदान के लिये इस विरोध को चूंकि बाह्य रूप से अभिव्यक्त करना ज़रूरी होता है, इसलिये मूल्य के एक स्वतन्त्र रूप की स्थापना की आवश्यकता बढ़ती जाती है, और यह क्रिया उस वक़्त तक जारी रहती है , जब तक कि पण्यों के पण्यों और द्रव्य में विभेदीकरण के फलस्वरूप यह आवश्यकता सदा के लिये पूरी नहीं हो जाती। अतएव, जिस गति से श्रम से उत्पन्न होने वाली वस्तुएं पण्यों में परिणत होती हैं , उसी गति से एक ख़ास पण्य द्रव्य में भी बदलता जाता है। [39]

श्रम से पैदा होने वाली वस्तुओं का सीधा विनिमय एक दृष्टि से तो मूल्य की सापेक्ष अभिव्यंजना का प्राथमिक रूप प्राप्त कर लेता है, लेकिन दूसरी दृष्टि से नहीं। यह प्राथमिक रूप है: क पण्य का x परिमाण = ख पण्य का y परिमाण । सीधी अदला-बदली का रूप यह होता है : क उपयोग-मूल्य का x परिमाण = ख उपयोग-मूल्य का y परिमाण। [40] इस अवस्था में क और ख नामक वस्तुएं अभी पण्य नहीं बन पाई हैं, बल्कि वे केवल अदला-बदली के ज़रिये ही पण्य बनती हैं। कोई भी उपयोगी वस्तु विनिमय-मूल्य प्राप्त करने की ओर उस समय पहला क़दम उठाती है, जब वह अपने मालिक के लिये उपयोग-मूल्य नहीं रह जाती, और यह उस समय होता है, जब वह अपने मालिक की तात्कालिक आवश्यकताओं के लिये ज़रूरी किसी वस्तू का फ़ाज़िल भाग बनती है। वस्तुओं का मनुष्य से अलग अस्तित्व होता है, और इसलिए मनुष्य उनको

हस्तांतरित कर सकता है। हस्तांतरण की यह क्रिया दोनों तरफ़ से हो, इसके लिये केवल यह ज़रूरी है कि लोग एक मौन समझौते के द्वारा इन हस्तांतरित करने योग्य वस्तुओं पर निजी स्वामित्व रखने वालों के रूप में और चुनांचे स्वाधीन व्यक्तियों के रूप में एक दूसरे के साथ व्यवहार करें। लेकिन सामूहिक संपत्ति पर आधारित आदिम समाज में ऐसी पारस्परिक स्वाधीनता की स्थिति नहीं होती, चाहे वह समाज पितृसत्तात्मक परिवार के रूप में हो , चाहे प्राचीन हिन्दुस्तानी ग्राम-समुदाय के रूप में, और चाहे वह पेरू देश के इंका राज्य के रूप में हो। इसलिये पण्यों का विनिमय शुरू में ऐसे समाजों के सीमांत प्रदेशों में ऐसे स्थानों पर आरंभ होता है, जहां उन समाजों का उसी प्रकार के अन्य समाजों से, अथवा उनके सदस्यों से, संपर्क कायम होता है। परंतु श्रम से उत्पन्न वस्तुएं जैसे ही किसी समाज के बाहरी संबंधों में पण्य बन जाती हैं, वैसे ही इसकी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप उसके अंदरूनी व्यवहार में भी उनका यही रूप हो जाता है। शुरू में उनका किन अनुपातों में विनिमय होता है, यह बात केवल संयोग पर निर्भर रहती है। उनका विनिमय इसलिये संभव होता है कि उनके मालिकों में उनको हस्तांतरित करने की इच्छा होती है। इस बीच दूसरों की उपयोगी वस्तुओं की ज़रूरत धीरे-धीरे ज़ोर पकड़ती जाती है। लगातार दोहराये जाने के फलस्वरूप विनिमय एक सामाजिक कृत्य बन जाता है। इसलिये कुछ समय बाद यह ज़रूरी हो जाता है कि श्रम के उत्पाद का कुछ हिस्सा ज़रूर विनिमय के ही ख़ास उद्देश्य से तैयार किया जाये। बस उसी क्षण से उपयोग की दृष्टि से किसी भी वस्तु की उपभोग-उपयोगिता और विनिमय की दृष्टि से उसकी उपयोगिता का भेद साफ़ तौर पर पक्का हो जाता है। दूसरी ओर, यह बात कि वस्तुओं का विनिमय किन परिमाणात्मक अनुपातों में हो सकता है, ख़ुद उनके उत्पादन पर निर्भर करने लगती है। रिवाज़ वस्तुओं पर निश्चित परिमाणों के मूल्यों की छाप अंकित कर देता है।

उत्पादों के सीधे विनिमय में हरेक पण्य अपने मालिक के लिये प्रत्यक्ष ढंग से विनिमय का साधन होता है, और दूसरे तमाम व्यक्तियों के लिये वह समतुल्य होता है, लेकिन केवल उसी हद तक, जिस हद तक कि उसमें इन व्यक्तियों के लिये उपयोग-मूल्य होता है। इसलिये इस अवस्था में विनिमय की जाने वाली वस्तुओं को ख़ुद अपने उपयोग-मूल्य से स्वतंत्र, या विनिमय करने वालों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं से स्वतंत्र, कोई मूल्य-रूप प्राप्त नहीं होता। जैसे-जैसे विनिमय किये गये पण्यों की संख्या और विविधता बढ़ती जाती हैं, वैसे-वैसे किसी मूल्य-रूप की आवश्यकता भी बढ़ती जाती है। समस्या और उसको हल करने के साधन एक साथ पैदा होते हैं। पण्यों के मालिक अपने पण्यों की दूसरे लोगों के पण्यों से बराबरी और विनिमय उस वक़्त तक बड़े पैमाने पर नहीं करते हैं, जब तक कि अलग-अलग मालिकों के विभिन्न प्रकार के पण्यों का किसी एक ख़ास पण्य के साथ विनिमय करना और मूल्यों के रूप में बराबरी करना संभव नहीं हो जाता। ऐसा कोई ख़ास पण्य अन्य विभिन्न पण्यों का समतुल्य बन जाने के फलस्वरूप तुरंत ही एक सामान्य सामाजिक समतुल्य का रूप धारण कर लेता है, हालांकि उसका यह स्वरूप कुछ संकुचित सीमाओं में ही होता है। जिन क्षणिक सामाजिक कृत्यों के कारण यह स्वरूप जन्म लेता है, वह उनके साथ ही प्रकट और लोप होता रहता है। बारी-बारी से और थोड़ी-थोड़ी देर के लिए यह रूप कभी इस पण्य में प्रकट होता है, तो कभी उस पण्य में। लेकिन विनिमय के विकास के साथ-साथ वह केवल कुछ ख़ास ढंग के पण्यों के साथ ही कस कर और अनन्य रूप से जुड़ जाता है, और द्रव्य-रूप धारण करने के फलस्वरूप उसका स्फटकीकरण हो जाता है।

पहले-पहल यह स्वरूप किस ख़ास पण्य से जुड़ता है, यह संयोग की बात होती है। फिर भी दो बातों का प्रभाव निर्णयात्मक होता है। द्रव्य-रूप या तो बाहर से आने वाली सबसे महत्वपूर्ण विनिमय की वस्तुओं के साथ जुड़ जाता है-और सच पूछिये, तो घरेलू उत्पाद के विनिमय-मूल्य के अभिव्यंजना प्राप्त करने के आदिम और स्वाभाविक रूप ये वस्तुएं ही होती हैं, या वह ढोर जैसी किसी उपयोगी वस्तु के साथ जुड़ जाता है, जो हस्तांतरित करने योग्य स्थानीय दौलत का मुख्य हिस्सा हो। ख़ानाबदोश क़ौमें सबसे पहले द्रव्य-रूप को विकसित करती हैं, क्योंकि उनकी सारी दुनियावी दौलत चल वस्तुओं के रूप में होती है और इसलिए उसे सीधे तौर पर हस्तांतरित किया जा सकता है, और क्योंकि उनके जीवन का ढंग ही ऐसा होता है कि परदेशी समुदायों से उनका निरंतर संपर्क कायम होता रहता है और इसलिए उनके उत्पाद का विनिमय ज़रूरी हो जाता है. मनुष्य ने अक्सर ख़ुद मनुष्य से दासों के रूप में द्रव्य की आदिम सामिग्री का काम लिया है, लेकिन इस उद्देश्य के लिए उसने ज़मीन का उपयोग कभी नहीं किया है. इस प्रकार का विचार केवल अच्छी तरह विकसित बुर्जुआ समाज में ही जन्म ले सकता था. १७ वीं सदी की आख़िरी तिहाई में यह विचार पहले-पहल सामने आया, और उसे राष्ट्रव्यापी पैमाने पर अमल में लाने की पहली कोशिश उसके सौ बरस बाद, फ़्रांस की बुर्जुआ क्रांति के ज़माने में हुई.

---

36 – 12वीं सदी में, जो कि अपनी धर्मभीरु वृत्ति के लिए विख्यात थी, कुछ बहुत ही नाज़ुक चीज़ें भी पण्यों में

गिनी जाती थीं। चुनांचे उस काल के एक फ्रांसीसी कवित ने लांदी की मंडी में मिलनेवाले मालों में न सिर्फ़ कपड़े, जूते, चमड़ा, ख़ेती के औज़ार, आदि गिनाये हैं, बल्कि "femmes folles de leur corps" ("वेश्याओं") का भी ज़िक्र किया है।

37 – प्रूदों शाश्वत न्याय की, justice éternelle की अपनी कल्पना को पण्यों के उत्पादन से मेल खानेवाले क़ानूनी संबंधों से लेने से शुरू करते हैं। कहा जा सकता है कि इस तरह वह साबित कर देते हैं – और इससे सभी भले नागरिकों को बड़ी सांत्वना भी मिलती है – कि पण्यों का उत्पादन, उत्पादन का उतना ही शाश्वत रूप है, जितना शाश्वत न्याय है। उसके वह पलटकर पण्यों के वास्तविक उत्पादनप में और उससे मेल खानेवाली क़ानूनी व्यवस्था में अपनी इस कल्पना के अनुसार सुधार करना चाहते हैं। उस रसायनशास्त्री के बारे में हमारी क्या राय होगी, जो पदार्थ की रचना और विघटन में आणविक परिवर्तनों के वास्तविक नियमों का अध्ययन करने और उसकी बुनियाद पर निश्चित समस्याओं को हल करने के बजाय "स्वाभाविकता" और "बंधुता" के "शाश्वत विचारों" की सहायता से पदार्थ की रचना और विघटन का नियमन करने का दावा करते हैं? जब हम कहते हैं कि सूदख़ोरी "justice éternelle " ("शाश्वत न्याय"), "équité éternelle " ("शाश्वत साम्य"), "mutualité éternelle" ("शाश्वत पारस्परिकता") और अन्य "vérités éternelles" ("शाश्वत सत्यों") के ख़िलाफ़ है, तब क्या हमें सूदख़ोरी के बारे में सचमुच उससे कुछ अधिक जानकारी प्राप्त हो जाती है, जो धर्मगुरुओं को प्रापत थी, जब उन्होंने कहा था कि सूदख़ोरी "gráce éternelle", "foi éternelle" ("शाश्वत अनुकंपा", "शाश्वत विश्वास") और "volonté éternelle de Dieu" ("भगतवान की शाश्वत इच्छा") के प्रतिकूल है?

38 – "कारण कि हर वस्तु का दोहरा उपयोग होता है... एक उपयोग ख़ुद उस वस्तु की विशेषता होता है, दूसरा नहीं; जैसे कि चप्पल पहनी जा सकती है और उसका विनिमय भी किया जा सकता है। ये दोनों चप्पल के ही उपयोग हैं, क्योंकि जो आदमी उस द्रव्य या अनाज के साथ चप्पल का विनिमय करता है, जिसकी उसे ज़रूरत होती है, वह भी चप्पल का चप्पल के रूप में ही उपयोग करता है। लेकिन वह प्राकृतिक ढंग से उसका उपयोग नहीं करता। कारण कि चप्पल विनिमय करने के लिए नहीं बनायी गयी थी।" (Aristoteles, De Republica, खंड 1, अध्याय 9)।

39 इससे हम बुर्जुआ समाजवाद की चतुराई का कुछ अनुमान लगा सकते हैं, जो पण्यों के उत्पादन को तो ज्यों का त्यों कायम रखना चाहता है, पर द्रव्य और पण्यों के "विरोध" को मिटा देना चाहता है, और चूंकि द्रव्य का अस्तित्व केवल इस विरोध के कारण ही होता है, इसलिये वह ख़ुद द्रव्य को ही मिटा देना चाहता है। तब तो हम पोप को मिटा कर कैथोलिक संप्रदाय को क़ायम रखने की चेष्टा भी कर सकते हैं। इस विषय के बारे में और जानने के लिये देखिये मेरी रचना Zur Kritik der Politischen Oekonomie, और आगे।

40 जब तक कि दो अलग-अलग उपयोग-मूल्यों का विनिमय होने के बजाय किसी एक वस्तु के समतुल्य के रूप में नाना प्रकार की अनेक वस्तुएं दी जाती हैं, जैसा कि जंगली लोगों में अक्सर होता है, तब तक उत्पाद की सीधी अदला-बदली भी अपनी आरंभिक अवस्था के प्रथम चरण में ही रहती है।